उपसंहार।

उपसंहार :

हिन्दी कहानी या उपन्यास को रेणु की देन अद्वितीय है। प्रेमचंद के बाद अज्ञेय आदि ने जैसा साहित्य दिया उसने अपने सहज रूप में थोडे से बुध्दिवादियों को ही छुआ। प्रेमचंद की कृतियों ने हिन्दी पाठकों के जितने बडे अंश को छुआ और प्रभावित किया, उस दृष्टि से प्रेमचंदोत्तर काल में क्षेत्र संकुचित होता गया। मनोवैज्ञानिक सूक्ष्मताओं को पकडने और आंकने की क्षमता थोडे लोगों में ही थी उस दिशा पर हिन्दी साहित्य अग्रसर होता जा रहा था। ऐसे ही समय "मैला आंचल" का प्रकाशन हुआ और फिर उनके उपन्यास, कहानियों का प्रादुर्भाव होता रहा।

रेणु मध्यमवर्गीय किसान-परिवार की देन थे। उनकी सारी कृतियों में इस वर्ग के स्थापित मूल्यों के प्रति, इस वर्ग में जो कुछ अच्छा है, उसके प्रति एक सहज ममत्व साफ दिखाई देता है । रेणु के चरित्रों को गौर से देखने पर कहीं शरतचन्द्र तो कहीं प्रेमचंद की सीमाएं भी दिखायी देती हैं। लेकिन रेणु के शिल्प ने उसे बडी ही कुशलता से हजम कर लिया है। "हिन्दी साहित्य को रेणु की देन इसलिए महत्वपूर्ण है कि प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी कथा-साहित्य की माइक्रोस्कोप वाली दृष्टि को एक ही झटके में उसने तोड दिया है।"[१]

" मैला आंचल " के माध्यम से रेणु ने स्वातंत्र्योत्तर ग्राम-जीवन के यथार्थ के विविध आयामों को बहुत गहराई से चित्रित किया इस गहराई का कारण यह था कि उन्होंने भारतीय ग्राम को अपने जिए हुए, अनुभव किये गये ग्राम की इकाई पर केन्द्रित करके पहचाना। इससे एक विशेष अंचल की अपनी निजी छवियां और अछवियां, शक्ति और अशक्ति तथा प्राकृतिक विशेषताएं तो उभरी ही, साथ ही साथ वह अंचल व्यापक सामाजिक समस्याओं को भी अधिक घनीभूत रूप में उभार सका। "मैला आंचल" के माध्यम से ख्याति प्राप्त कर रेणु ने कहानी के क्षेत्र में भी यह आंचलिकता उभारनी चाही और "रसप्रिया" "तीसरी कसम" जैसी कहानियों का निर्माण किया।

रेणु की कहानी आम आदमी की कहानी है। उनकी कहानियों में यह शोषित और पीडित आम आदमी बहुत पहले से ही प्रतिष्ठित और पीडित आम आदमी बहुत पहले से ही प्रतिष्ठित हो चुका था। उनकी अधिकतर कहानियों के पात्र उस वर्ग के है जो श्रमजीवी है और भरपूर श्रम के बावजूद खाली पेट रहना या अभावों से जूझते रहना उनकी नियती है। "रसप्रिया" कहानी का मिरदंगिया छोटी जाति का है, जो गलती से किसी ब्राम्हण लडके को बेटा कहता है और पिटते पिटते बच जाता है। जातिभेद ही उसके जोधन गुरु की लडकी रमपतिया के साथ संबंध में बाधक होता है। अन्तिम

दिनों में वह जिंदगी नहीं जीता, शोभा मिसिर के शब्दों में "थेथरई" करता है। " ठेस " कहानी का सिरचन मजूर है और "सिरपंचमी का सगुन" कहानी का सिंधाय और कालू ग्रामीण मेहनतकश है। "पंचलाईट" भी महतो टोली के जीवन के एक टुकडे पर आधारित है। "लाल पान की बेगम" और "आत्मलक्षी" कहानियों के पात्र भी छोटे जाति के है। उनके कथित छोटेपन के भीतर से बडप्पन का आलोक फूटता है गनपत अपनी पार्टी में तीन कौडी का आदमी भी नहीं माना जाता, जबकि सच्ची जनसेवा और वास्तविक संघर्ष उसी के द्वारा होता है। " तीसरी कसम " में रेणु ने नारी शोषन की कहानी बहुत कुशलता से कही है।महुआ घटवारिन की तरह हीराबाई को भी सौदागर प्राय: खरीदते रहते है। हीरामन को लाख बुरा लगे, दर्शकों की निगाहों में वह रंडी है, पतुरिया है। हीरामन सोचता है," सरकस कम्पनी में क्यों नहीं काम करती ? - -- - सरकस कम्पनी में बाघ नचायेगी । - - बाघ के पास जाने की हिम्मत कौन करेगा। सुरक्षित रहेगी हिराबाई।"[२] एका वेश्या या रंडी भी आम आदमी की परिधि में आती है। उस पराश्रिता नारी को हीरामन का भोला मन बाघ यानी कि शक्ति से खंडित करना चाहता है । अबला को इतना सबल बनाना चाहता है कि कोई सौदागर उनकी बोली न लगा सके। इस तरह स्पष्ट है कि रेणु की अधिकतर कहानियां आम आदमी की कहानियां है।

"रेणु" के कहानियों की सर्जनात्मकता रूप, रस, गंध, स्पर्श, ध्वनि के अविरल प्रवाह पर निर्भर है, जिसमें एक-एक स्वर या तार का बजना अलग ही सुना जा सकता है। रेणु की सृजन शीलता में अनुभवों का अन्तर्मार्ग एक ही है - इसी अर्थ में उनकी कहानियां "ठुमरी धर्मा" कही गयी है - वे सब ओर के राग-स्पर्श से होकर एक विशिष्ट संवेदनात्मक अनुभूति की इकाई में घुल-मिल जाती है।

"रेणु" ग्राम जीवन के विविध अनुभवों के स्वामी है। उन्होंने अपनी कहानियों में न केवल मानवीय संवेदनाओं के विविध आयामों और रंगों की

गहरी पहचान उभारी है बल्कि प्रकृति सौंदर्य के अनेक कोणों और पर्तों (रूप, रंग, गंध, स्पर्श आदि) को अपने भीतर महसूस किया है और उन्हें अपनी कहानियों में मूर्त किया है। इस प्रकार "रेणु" ने मानवीय और प्राकृतिक दोनों ही आयामों के साहचर्य और तनाव से निर्मित ग्राम-जीवन-यथार्थ की गहरी पहचान की है और वे अपनी निजी विशिष्टताओं के साथ प्रेमचंद की परंपरा की एक नयी सशक्त कडी के रूप में उभरते है।"[3]

" रेणु " का रंग सबसे अलग है। उनके कथानक के स्वरूप को किसी भी नये - पुराने आधारपर परिभाषित नहीं किया जा सकता और न किसी के साथ उसे जोडा जा सकता है। इनके कथानकों में घटनाओं परिस्थितियों, पात्रों और परिवेश का अद्भुत पारस्परिक तनाव दिखाई पडता है। कोई कथा सीधे नहीं चलती। एक विशेष सन्दर्भ से टकराकर कोई कहानी शुरू होती है और वह शुरू से ही सीधे चलने के स्थान पर परिस्थितियों, परिवेश और पात्रों को एक में लपेट लेती है।"

संदर्भ

१. श्री. वीरेन्द्र नारायण : एक संस्मरण : एक विचार
(रेणु का रचना संसार - संपा. विजय) पृ. ५६.

२. ठुमरी - पृ. ६.

३) धनंजय वर्मा - नयी कहानी : संदर्भ और प्रकृति
(संपा. देवीशंकर अवस्थी) पृ. १९४

परिशिष्ट / संदर्भ ग्रंथ-सूची

परिशिष्ट

फणीश्वरनाथ " रेणु " का रचना संसार

उपन्यास :	मैला आंचल	–	(१९५४)
	परती परिकथा	–	(१९५७)
	कितने चौराहे	–	(१९६०)
	दीर्घतपा	–	(१९६३)
	जुलूस	–	(१९६५)
	कलंक – मुक्ति		
	पल्टू बाबू रोड	–	(१९७९)
कहानी संग्रह :	ठुमरी	–	(१९५९)
	हाथ का जस (संपादन)		(१९५९)
	आदिम रात्रि की महक		(१९६७)
	अगिनखोर	–	(१९७३)
	मेरी प्रिय कहानियां		(१९७३)
	एक श्रावणी दोपहरी की धूप		(१९८४)
	अच्छे आदमी	–	(१९८६)
	प्रतिनिधी कहानियां		(१९८४).
रिपोर्ताज तथा संस्मरण :	नेपाली क्रांति कथा		(१९७९)
	ऋणजल धनजल	–	(१९७९)
	वनतुलसी की गंध	–	(१९८४)
	आत्मपरिचय	–	(१९८८)
	श्रुत अश्रुत पूर्व	–	
	एकांकी के दृश्य	–	

संदर्भ ग्रंथ सूची

१) आंचलिक हिन्दी कहानी – डॉ. चन्द्रेश्वर कर्ण
चित्रलेखा प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र. संस्करण, १९७७.

२) आंचलिक उपन्यास और रेणु – डॉ. सत्यनारायण उपाध्याय
संजय प्रकाशन, वाराणसी, प्र. संस्करण, १९८०

३) आंचलिकता और हिन्दी उपन्यास – डॉ. नगीना जैन
अक्षर प्रकाशन, दिल्ली, प्र. संस्करण , १९७९

४) हिन्दी के आंचलिक उपन्यास सामाजिक एवं सांस्कृतिक
संदर्भ – डॉ. विमल शंकर नागर
प्रेरणा प्रकाशन, मुरादाबाद, प्र. संस्करण १९८५

५) हिन्दी के आंचलिक उपन्यास – डॉ. मृत्युंजय उपाध्याय
चित्रलेखा प्रकाशन – प्र. संस्करण , १९८९

६) कला और संस्कृति – वासुदेव शरण अग्रवाल

७) कथाकुंज – संपादक डॉ. त्रिभुवनसिंह
प्रकाशन संस्थान, दिल्ली, प्रथम संस्करण १९८१

८) फणीश्वरनाथ " रेणु " की कथा साहित्य: समाज शास्त्रीय
विश्लेषण – जोगेन्द्रसिंह वर्मा.
ऋषभचरण जैन एवम् सन्तति, दिल्ली प्र. संस्करण १९८६

९) कथाकार फणीश्वरनाथ रेणु – डॉ. चन्द्रभानु सोनवणे
पंचशील प्रकाशन, जयपुर, प्र. संस्करण , १९८४

१०) रेणु का रचना संसार – संपा. विजय
विभूति प्रकाशन, दिल्ली, प्र. संस्करण, १९८५

११) फणीश्वरनाथ " रेणु " का साहित्य – डॉ. अंजलि तिवारी
ऋषभचरण जैन एवम् सन्तति, दिल्ली, प्र. संस्करण १९८३

१२) हिन्दी के आंचलिक उपन्यास की शिल्प विधि – जवाहर सिंह –
नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, प्र. संस्करण – १९८६

१३) स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में सामाजिक परिवर्तन – डा. मैसलाल गर्ग
चित्रलेखा प्रकाशन, इलाहाबाद प्र. संस्करण १९७९

१४) साहित्यिक निबंध – डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ.
जवाहर पुस्तकालय मथुरा, प्रथम संस्करण , १९८८

१५) हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ. हरिश्चन्द्र वर्मा डॉ. रामनिवास गुप्त
मंथन पब्लिकेशन, रोहतक, प्र. संस्करण १९८२

१६) द्वितीय महायुध्दोत्तर हिन्दी साहित्य का इतिहास डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय
राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली प्र. संस्करण, १९८२

१७) साहित्यिक निबंध – डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ
जवाहर पुस्तकालय मथुरा, प्र. संस्करण १९८८

१८) हिन्दू परिवार मीमांसा – हरिदत्त वेदालंकार,

१९) हिन्दी तथा अंग्रेजी के आंचलिक उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन
– डॉ. राजकुमारी सिंह
अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण, १९८८